

CHIRPING SPARROW



Title Verification No. : UPENG 03049/24/1/2005-TC



You Can Be Whatever You Want To Be!

*There is inside you
All of the potential
To be whatever you want to be;
All of the energy
To do whatever you want to do.
Imagine yourself as you would like to be,
Doing what you want to do,
And each day, take one step
Towards your dream.
And though at times it may seem too
Difficult to continue,
Hold on to your dream.
One morning you will awake to find
That you are the person you dreamed of,
Doing what you wanted to do,
Simply because you had the courage
To believe in your potential
And to hold on to your dream.*

- by Donna Levine

Young Achievers



ROHAN JAIN
Mandya

- Young Jaina Awardee 2007
- State National Scout
- Participation in International Scout at Athyland Park, Essex (U.K.)
- Participation in State Quiz 89.92% X



RADHIKA S. HULBATTE
Belgaum

- Young Jaina Awardee 2007
- National Basketball player
- Participation in XXXII National Sports Festival for Women Group-I
- 88.96% X



SHWETA JAIN
Ashoknagar

- Young Jaina Awardee 2007
- National Handwall Player



SHEETAL JAIN
Gulabpura

- Young Jaina Awardee 2007
- Participation in International Scout at Athyland Park, Essex (U.K.)
- Rashtrapat Scout



MEDHA JAIN
Indore

- Young Jaina Awardee 2005, 2007
- Participation in State Adventure Camp for trekking



KHYATI S. VAKHARIA
Bangalore

- Young Jaina Awardee 2005, 2007
- Participation in FIT Kid World Championship Malasia
- 3rd in trumbling in 3rd National Acrobatics & Trampoline Gymnastics Championships
- Participation in XXXII National Sports for women
- CET-264 Rank
- 93.3% XII-Science

CHIRPING SPARROW

Year-3, Issue-I

Chirping Sparrow is published quarterly by the Maitree Jankalyan Samiti.
It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of Maitree Jankalyan Samiti.
E-mail : maitreesamoooh@hotmail.com • website : www.maitreesamoooh.com
Mobile : 94254-24984

जैन धर्म और वनस्पति विज्ञान

अन्य जीवधारियों की तरह वनस्पतियों में भी संज्ञायें, कषायें, लेश्यायें एवं संवेदनशीलता होती है। कई वनस्पतियों में उक्त गुण स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं एवं आधुनिक यंत्रों द्वारा भी सिद्ध किए गए हैं।

प्रस्तुत आलेख में वनस्पति में पाई जाने वाली लेश्याएँ, कषायें, संज्ञाएँ और संवेदना आदि के विषय में कुछ सामग्री प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, ताकि हम जान सकें कि हमें पेड़-पौधों के प्रति उतनी ही आत्मीयता रखनी चाहिए जितनी और जैसी हम अपने परिवारजनों के प्रति रखते हैं।

जैन धर्म में वनस्पति को सजीव माना गया है। वनस्पति एकेन्द्रिय जीव है, जो अपनी एकमात्र स्पर्शन इन्द्रिय के द्वारा जीवन की समस्त क्रियाओं को सम्पन्न करता है। वह शरीर बनाता है, श्वास लेता है, उसमें आहार, भय, मैथुन व परिग्रह - ये चारों संज्ञायें (इंस्टिक्ट्स) पायी जाती हैं। वह कषायवान भी होता है। अन्य जीवों की तरह उसमें मति व श्रुतज्ञान होता है पर उसका यह ज्ञान सम्यक् के अभाव में अज्ञान ही माना गया है।

जैन धर्म में वनस्पति के बाबत कही गयी तमाम बातें आज विज्ञान ने अपने यंत्रों व प्रयोगों के द्वारा सिद्ध कर दी हैं। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. जगदीश चन्द्र बसु के प्रयोगों ने वनस्पति में चेतना, संवेदना, श्वसन, जन्म, मरण आदि जीवन के सभी गुण सिद्ध कर दिए हैं।

लेश्या

जैन दर्शन में कषाय से युक्त मन-वचन व काय की क्रिया को लेश्या कहा गया है। शरीर के रंग को द्रव्य लेश्या और जीव के अन्तरंग भावों को भाव लेश्या कहते हैं। यह छह प्रकार की होती है जिसमें कृष्ण, नील व कापोत ये तीन अशुभ रूप हैं तथा पीत, पद्म व शुक्ल ये तीन शुभ रूप हैं। देव व नारकी जीवों में द्रव्य व भाव लेश्या समान होती है अन्य जीवों में समानता का नियम नहीं है। वनस्पति जीवों में अशुभ तीन भाव लेश्याएँ मानी गयी हैं। बाह्य रंग की अपेक्षा छहों द्रव्य लेश्याएँ संभव हैं।

1. कृष्ण लेश्या

तीव्र क्रोध, वैरभाव, क्लेश, संताप, हिंसा से युक्त तामसी भाव कृष्ण लेश्या के प्रतीक हैं। वनस्पति में कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो इस लेश्या के समान ही आचरण करते दिखायी पड़ते हैं। तस्मानिया के जंगलों में 'होरिजन्टिल स्क्रब' नामक वृक्षों में अत्यन्त हिंसात्मक प्रवृत्ति देखने में आती है। इन वृक्षों की डालियाँ और जटाएँ जानवरों या मनुष्यों के निकट आते ही सक्रिय हो जाती हैं और उनके शरीर से लिपट जाती हैं। तीव्र कसाव के कारण पशु या मनुष्य छुटकारा पाने के लिए तड़पता है और अन्ततः दम तोड़ देता है।

2. नील लेश्या

आलस्य, मूर्खता, भीरुता, अतिलोलुपता आदि होना नील लेश्या के प्रतीक हैं। यह लेश्या भी वनस्पति में दिखायी पड़ती है। ऐसी अनेकों वनस्पतियाँ जो कि आलसी या हठी स्वभाव वाली होती हैं, उनके बीज सुप्तावस्था में पड़े



रहते हैं। शंखपुष्पी, बथुआ, बैंगन आदि के बीजों को अंकुरित कराने के लिए उन्हें उपचारित करना पड़ता है। इन्हें उच्च ताप, निम्न ताप, प्रकाश, अम्ल, पानी या कुछ रासायनिक पदार्थों के प्रभाव से सक्रिय किया जाता है तभी अंकुरण हो पाता है। इसी प्रकार तम्बाकू, गोखरू, सेव, सिंघाड़ा, चीड़ आदि में भी ऐसी सुप्तावस्था होती है।

कलश पादव, यूट्रीकुलेशिया, वटरवर्ट सनड्यू आदि पौधे अपनी गंध, रंग, रूप आदि से कीड़ों को आकर्षित करते हैं। उन्हें खाने की लोलुपता इनमें विशेष पायी जाती है। 'यूट्री कुलेरियड' जाति का पौधा स्थिर पानी में उगता है। इसकी पत्तियाँ सुई के आकार की होती हैं और पानी पर तैरा करती हैं। पत्तियों के बीच में छोटे-छोटे हरे रंग के गुब्बारे के आकार के फूले अंग रहते हैं। पौधा लोलुपतावश इन्हीं गुब्बारों से कीड़ों को पकड़ता है। गुब्बारे के भीतर दीवारों से पौधा एक रस छोड़ता है जो कीड़े को नष्ट कर देता है।

वटरवार्ट नामक पौधा भी कीड़ों को पकड़ने और खाने में आनन्द लेता है।

3. कापोत लेश्या

निंदा, ईर्ष्या, रोष, शोक, अविश्वास आदि कापोत लेश्या के लक्षण हैं। अशुभ प्रकृति युक्त इस लेश्या वाले जीव कम हिंसक होते हैं, परन्तु दूसरों को पीड़ा पहुँचाने वाले होते हैं। वनस्पतियों में नागफनी, काकतुरई, कौंच, चमचमी आदि अनेक ऐसे उदाहरण हैं जो अपने काँटों, दुर्गन्ध या खुजली देने वाले अवगुणों से युक्त होते हैं। इनको स्पर्श करने या इनके नजदीक जाने से कुछ समय के लिए कष्ट अवश्य झेलना पड़ता है।

कुछ वनस्पतियाँ मनुष्यों के लिए लाभप्रद भी हैं उनमें अशुभ लेश्या होते हुए भी हित की प्रवृत्ति पायी जाती है। मेडागास्कर में पाया जाने वाला 'जल वृक्ष' राहगीरों को जल प्रदान करता है। इस पौधे की पत्तियों के डण्डल का निचला भाग एक कप के आकार का होता है। प्यासे राहगीर पत्ती को तोड़कर इस कप में से पानी निकाल लेते हैं।

सुमात्रा द्वीप में 'जलवर्षक' नामक कुछ ऐसे पौधे होते हैं जो बूँद-बूँद कर पानी टपकाते रहते हैं। ब्राजील में पैदा होने वाले रबर वृक्ष तो विश्वविख्यात हैं। इनके तने से रबर का दूध प्राप्त किया जाता है। इनके अलावा औषधि, फल, अन्न, भोजन व वस्त्र प्रदान करने वाले पौधों की प्रवृत्ति भी भली जान पड़ती है।

कषायें

1. क्रोध - क्वीन्स और न्यू साउथ वेल्स के जंगलों में डंक मारने वाला वृक्ष होता है। इन वृक्षों पर नुकिले काँटे होते हैं। इनकी पत्तियाँ भी घने बालों से युक्त होती हैं। इस वृक्ष के समीप जाने पर पत्तियाँ शरीर से चिपक जाती

हैं और अपने रोएँ छोड़ देती हैं जिससे अत्यंत खुजली होने लगती है। इस तरह यह अपना आक्रोश प्रकट करती हैं।

2. मान - अपने अहं के विस्तार की भूख भी वनस्पति में पायी जाती है। 'बरगद' आदि वृक्षों में विस्तारवादी प्रवृत्ति पायी जाती है। यह वृक्ष अपनी डालियों से शाखाएँ निकालता है जो भूमि पर आकर तने और जड़ का रूप ले लेती हैं और इस तरह विस्तार बढ़ता जाता है। कलकत्ता के बॉटनिकल गार्डन में खड़े बरगद का विस्तार लगभग तीन हजार फुट की परिधि में है। बरगद का जरा सा बीज इतना फैल कर अपने अहं को पुष्ट करता मालूम पड़ता है।

'यूकेलिप्टस' नामक वृक्ष की जड़ें इतना ज्यादा पानी अवशोषित करती हैं कि आस-पास की वनस्पति का बढ़ना मुश्किल हो जाता है। यह वृक्ष बहुत तेजी से बढ़कर 200-300 फुट ऊँचाई तक तन कर सीधा खड़ा रहता है।

3. माया - यह माया या कुटिलता का भाव कीटभक्षी पौधों में स्पष्ट दिखायी देता है। यह अपने रूप, रस, गंध से कीट-पतंगों को अपनी ओर आकृष्ट करता है और समीप आने पर पकड़ कर उन्हें नष्ट कर देता है। अमरबेल भी दूसरे वृक्ष पर बढ़कर उसे धीरे-धीरे नष्ट कर देती है।

4. लोभ - वनस्पतियाँ लोभ के वशीभूत होकर अपना भोजन जमीन के भीतर अपनी जड़ों, तनों में संचित कर लेती हैं। गाजर, मूली, शलजम, आलू, चुकन्दर आदि ऐसी ही वनस्पतियाँ हैं।

संज्ञाएँ

जैनाम्नाय के अनुसार आहार, भय, मैथुन (काम-वासना) एवं परिग्रह की प्रवृत्ति वनस्पतिकार्थिक जीवों से लेकर पंचेन्द्रिय जीवों तक में पायी जाती है।

1. आहार - आहार संज्ञा वनस्पति में कई प्रकार की होती है। कुछ पौधे स्वयंपोषी होते हैं जो अपना भोजन स्वयं बनाते हैं। कुछ पौधे परजीवी होते हैं जो कि आंशिक रूप से या पूरी तरह से दूसरे पौधों पर निर्भर रहते हैं। अमरबेल एक ऐसी बेल है जो अपनी जड़ें दूसरे पौधे के तने में घुसाकर वहाँ से भोज्य सामग्री चूसती रहती है। इसी प्रकार बेलेनोफोरा, रेफ्लेशिया आदि पौधे हैं जो कि दूसरे पौधे की जड़ों में घुसकर अपना भोजन लेते हैं। इसी प्रकार 'ओरोबेंकी' पौधे का बीज तम्बाकू, मूली या बैंगन के पेड़ों पर ही अंकुरित होता है।

कीटभक्षी व मांसाहारी पौधों के बारे में पूर्व में ही स्पष्ट किया जा चुका है जिनका आहार जीव-जंतु, कीट-पतंगे, पशु-पक्षी एवं मनुष्य तक बनते हैं।

अघोरी स्वभाव वाले जीवों की तरह बहुत सी फफूँद आदि किस्म की वनस्पति सड़े दुर्गंध युक्त पदार्थों पर उत्पन्न हो जाती है और वहीं से भोजन ग्रहण करती है।

2. भय - जिस प्रकार विपत्ति आने पर जीव भयभीत होते हैं इसी प्रकार वनस्पति भी विपत्ति की आशंका से भयभीत होकर काँपने लगती है। उसके रोएँ खड़े हो जाते हैं। 'छुईमुई' के पौधे को छूने मात्र से उसकी पत्तियाँ भय से सिमट जाती हैं। 'जवागल' वनस्पति हथेली पर रखते ही काँपने लगती है।

जिस प्रकार सभी जीव अपने जीवन की रक्षा के उपाय करते हैं, वनस्पति भी अपनी रक्षा के उपाय करती है। 'काकतुरई' अपनी दुर्गंध फेंककर रक्षा करती है। 'नागफनी' अपने काँटों के माध्यम से अपनी रक्षा करती है। इसी प्रकार अत्यन्त सूक्ष्म शैवाल वर्ग के पौधों के बीजाणु भोजन एवं पानी के अभाव में अपने चारों ओर चिकनी म्यूसिलेज की भित्ति धारण कर लेते हैं। यह भित्ति बाह्य वातावरण एवं आघातों से पौधे की रक्षा करती है।

3. मैथुन - निम्नवर्गीय एककोशीय पौधे से लेकर विशालकाय वृक्षों तक में मैथुन अर्थात् काम-वासना की इच्छा देखने में आती है। मनुष्यों एवं अन्य जन्तुओं में मुख्यतया लैंगिक जनन ही होता है परन्तु पौधों में वर्धी, अलैंगिक एवं लैंगिक तीन प्रकार से जनन माना गया है। वनस्पति में एक ही पौधे के अंतर्गत नर व मादा का होना उनके नपुंसक होने की सूचना है जिनमें काम-वासना स्त्री-पुरुष से भी ज्यादा होती है।

4. परिग्रह - भोजन संचित करने की प्रवृत्ति मूली, गाजर, आलू, अदरक आदि पौधों में दृष्टिगोचर होती है, जो अपनी जड़ों व तने में खाद्य सामग्री एकत्रित कर लेते हैं। बंदगोभी, प्याज आदि अपनी पत्तियों में भोजन संगृहीत करते हैं। नागफनी आदि अपने तने में भोजन इकट्ठा किए रहते हैं। जैनागम में यह भी उल्लेख आया है कि कुछ ऐसी भी वनस्पतियाँ हैं जिनकी जड़ें जिस दिशा में कीमती धातु सोना-चाँदी आदि होते हैं, उस दिशा में बढ़ती हैं। वर्तमान में ऐसे पौधे, जो धातु व पानी के रिजर्व वायर खोजने में सहयोगी होते हैं, ज्ञात हो चुके हैं। यह वृक्षों की परिग्रह संज्ञा को परिलक्षित करते हैं।

संवेदनशीलता

डॉ. बसु और अन्य कई वनस्पति विज्ञानियों ने वनस्पति की संवेदनशीलता का पता लगाने में कई प्रयोग किए हैं। गाजर, मूली, अंगूर, गोभी, चुकन्दर, लिली आदि पौधों पर अपने प्रयोग के दौरान उन्होंने देखा कि विद्युत प्रवाह, आघात, उच्च एवं निम्न ताप आदि के प्रभाव में पौधे विचलित हो जाते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

अपने प्रयोगों के दौरान उन्होंने पौधों को कई प्रकार से आघातित किया एवं संवेदना दर्शाने वाला यंत्र (पोलीग्राफ मशीन) तारों द्वारा पौधे से जोड़ दिया। उन्होंने देखा कि एक सामान्य पौधे की तुलना में आघातित पौधे की सुई अपने स्थान से विचलित हो रही है। उपकरण की सुई का विचलन इस बात पर निर्भर है कि कैसा, कितना एवं किस तरह का आघात दिया गया है।

भारतीय वैज्ञानिक डॉ. टी. एन. सिंह ने वनस्पति पर संगीत का स्पष्ट प्रभाव देखा है। संगीतमय मधुर वातावरण एवं कोलाहलपूर्ण वातावरण की वनस्पतियों में स्पष्ट असर पाया जाता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार पेड़-पौधे उन सूक्ष्म ध्वनियों को भी सुन-पकड़ लेते हैं व उन पर अपनी अनुक्रिया दे सकते हैं जिन्हें मनुष्य के कान ग्रहण करने में प्रायः असमर्थ होते हैं। पेड़-पौधे उन रंग-तरंग दैर्घ्यों को (इन्फ्रारेड या अल्ट्रावायलेट) भी देख लेते हैं जिन्हें मनुष्य के नेत्र नहीं देख सकते। कई पेड़-पौधे टी.व्ही.की उच्च फ्रीक्वेंन्सी तथा एकसरे के प्रति भी काफी संवेदनशील होते हैं।

क्ली बैक्स्टर ने पौधों की संवेदनशीलता के बारे में कहा है कि पौधे इंसान तो इंसान कमरे में जाला बुनने वाली मकड़ी तक की गतिविधियों पर आँख रखते हैं। वनस्पति में पायी जाने वाली संवेदनशीलता पर सैकड़ों प्रयोग हैं। इस तरह यह सुस्पष्ट है कि प्राणियों की तरह वनस्पति में भी सभी प्रकार के जैव गुण पाये जाते हैं।

यदि जैन धर्म में निरूपित जैव तथ्यों तथा आधुनिक विज्ञान द्वारा प्ररूपित जैन तथ्यों की तुलना की जाए तो अनेक रहस्य प्रकट हो सकते हैं और हम सहज ही धर्म की वैज्ञानिकता को पुष्ट कर सकते हैं।

- डॉ. अशोक जैन, ग्वालियर

Q. ऐसा कहा जाता है कि गलत काम करने से भगवान या तीर्थंकर नाराज या क्रोधित हो जाते हैं और दण्ड देते हैं। क्या यह धारणा सही है? अगर है तो बताइये कि भगवान क्रोधित होते हैं तो उनकी क्रोध कषाय सक्रिय है, फिर वे भगवान या तीर्थंकर कैसे हैं?

अंकेश पाटनी, नयावास

A. गलत काम करने से पाप का बंध होता है। और सभी पाप प्रकृतियाँ भावों के अनुसार बंध को प्राप्त होती हैं। गलत काम करने के लिए जिस तीव्रता (intensity) के भाव होते हैं, उसी अनुसार उतनी शक्ति वाले कर्म आत्मा के साथ बंध जाते हैं। भाव बंध की अपेक्षा देखें तो गलत काम करते समय राग-द्वेष से युक्त भाव ही तो भाव बंध हैं।

भगवान का स्वरूप लिखते हुए कवि भागेन्दुजी ने महावीराष्टक में लिखा है -

अताम्रं यच्चक्षुः कमल युगलं स्पंदरहितं
जनानकोपापायं प्रकटयति वाभ्यंतरमपि।
स्फुटं मुर्तिर्यस्य प्रशमितमपि वाति विमला
महावीरस्य स्वामी नयन पथगामी भवतु मे॥

भगवान के नेत्र कमल, लालिमा से रहित हैं, जो लोगों के बीच यह प्रगट करते हैं कि भगवान बाहर और भीतर क्रोध से रहित हैं। संस्कार से रहित उनकी दिगम्बर मुद्रा अत्यंत शांतिदायक और निर्मल है। ऐसे महावीर स्वामी हमारे नेत्रों से होकर हमारे हृदय में विराजमान हों। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भगवान या तीर्थंकर क्रोध से रहित होते हैं, और इसीलिए वे भगवान या तीर्थंकर हैं।

Q. भगवान का मंदिर किस दिशा में होना चाहिए।

अंकेश पाटनी, नयावास

A. भगवान का मंदिर पूर्व या उत्तरमुखी होना चाहिए। क्योंकि पूर्व दिशा यमांतक दिशा है और उत्तर दिशा विघनांतक दिशा है। शेष दो दिशाएँ पश्चिम दिशा पदमांतक एवं दक्षिण दिशा प्रजांतक दिशा है। इसलिए पूर्व और उत्तर दिशा ही श्रेष्ठ है।

Q. क्या भगवान को टूटे हुए चावल चढ़ाने से पाप मिलता है।

अंकेश पाटनी, नयावास

A. भगवान के सम्मुख अपने द्वारा अच्छी से अच्छी वस्तु समर्पित की जानी चाहिए। जैसे तो सोने या चाँदी के पुष्प चढ़ाने की परम्परा रही है। परन्तु आर्थिक विपन्नता के कारण अपन पुष्प, अक्षत एवं अर्घ के रूप में भगवान के सामने चावल चढ़ाते हैं। चढ़ाने वाले चावल टूटें न, यह सावधानी द्रव्य बनाते समय रखनी चाहिए। अगर टूट जाते हैं तो हमारी असावधानी तो मानी जाएगी, लेकिन कोई पाप बंध नहीं होगा।

Q. क्या भगवान की आरती करने और अगरबत्ती जलाने से ही धर्म होता है?

अंकेश पाटनी, नयावास

A. वास्तव में भगवान की आरती करने का मतलब भगवान के गुणों के प्रति अपना अनुराग व्यक्त करना है। कहते भी हैं - 'वंदे तद्गुण लब्धये' यानी आपके जैसे गुणों की प्राप्ति के लिए हम आपकी स्तुति करते हैं। हमें केवलज्ञान की प्राप्ति हो इस पवित्र भावना से आरती करते समय दीपक जलाया जाता है और जीवन को सुगंधित बनाने के लिए या आत्म-सुगंध पाने के लिए भगवान के सम्मुख सुगंधित धूप आदि जलाई जाती है, जो कि शुद्ध और जीवरहित होनी चाहिए। अगरबत्ती की पवित्रता में संदेह है इसीलिए उसका उपयोग करना उपयुक्त नहीं है। इन क्रियाओं में धर्म नहीं है। धर्म तो हमारी आत्मा की पवित्रता में है। आत्मा की पवित्रता के लिए अच्छे मन से अच्छे काम करना ही धर्म है।

Q. क्या भाग्य पर विश्वास करना चाहिए?

अंकेश पाटनी, नयावास

A. भाग्य और पुरुषार्थ जीवन में एक साथ अपना रोल रखते हैं। कभी भाग्य साथ न दे तो पुरुषार्थ करने पर भी सफलता नहीं मिलती। और यदि भाग्य साथ दे तो अल्प पुरुषार्थ से भी कार्य

सफल होता हुआ देखा जाता है। लेकिन पुरुषार्थ के द्वारा प्राणी अपने भाग्य को बदल सकता है। दो व्यक्तियों को एक ही कमरे में लड्डू ढूँढ़ने को कहा जाता है। एक चुपचाप बैठा रहता है, पर दूसरा व्यक्ति प्रयास कर लड्डू ढूँढ़ता रहता है और उसे लड्डू मिल जाता है। वह व्यक्ति पहले व्यक्ति से कहता है कि देखो मेरे प्रयास से लड्डू मिल गया, लो तुम भी इसे खा लो। पहला व्यक्ति आधा लड्डू लेकर मुस्कुराता है और कहता है कि देखो मेरे भाग्य से मुझे लड्डू मिल गया। इसमें लगता है कि भाग्यवादी जीत गया, लेकिन गौर से देखें तो मालूम पड़ेगा कि पुरुषार्थ करने वाले को ही वास्तविक फल मिला।

Q. क्या वीतरागता या दिगम्बरत्व को धारण किए बिना मनुष्य मोक्ष नहीं जा सकता?

शांति जैन, सहजपुर

A. मनुष्य जब जन्म लेता है तब उसकी देह निरावरित (दिगम्बर) होती है और मन में विकारी भाव अव्यक्त रहते हैं। धीरे-धीरे मनुष्य जब बड़ा होता है तब उसमें विकारी भाव छल, कपट, दिखावा आदि प्रकट होने लगते हैं तथा सभ्यता के नाते अपने उन विकारों को छिपाने के लिए वह वस्त्र-आवरण आदि धारण करता है। यदि वह आत्मज्ञानपूर्वक अपने विकारी भावों को जीतकर बालकवत् निर्विकार और निरावरित (दिगम्बर) अवस्था में रहता है तो यह उसकी सहज स्वाभाविक अवस्था है।

समस्त विकारों से रहित सहज स्वाभाविक परम विशुद्ध अवस्था का नाम ही मोक्ष है। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को बाहर-भीतर हर तरह से विकारों से मुक्त होना जरूरी है।

सबसे कठिन है भीतरी विकारों को हटाना; उन पर विजय प्राप्त करना। भीतरी आसक्ति या ममत्व भाव के कारण ही हम घर-गृहस्थी, वस्त्र, आभूषण का संचय करते हैं। इसलिए

भीतरी आसक्ति या ममत्व भाव से मुक्त होने के लिए सबसे पहले बाह्य वस्तुओं (असन, वसन) से मुक्त होना होता है। यह मुक्ति की यात्रा की प्रारम्भिक तैयारी है, मुक्ति की ओर जाने का पहला कदम है। इसके बिना आगे की यात्रा संभव नहीं है। बाह्य में यथाजात दिगम्बर रूप और अंतरंग में वीतराग भाव - यही मुक्ति की ओर जाने का सही मार्ग है। जो भी हो, यह बहस का मुद्दा नहीं है। यह अनुभूति से प्राप्त सचाई है। इसे मानना या नहीं मानना व्यक्ति के दृष्टिकोण पर निर्भर है।

Q. भगवान को फूल चढ़ाने में क्या दोष है? यदि इससे फूल के जीव मरते हैं तो वे जीव तो डाली पर लगे फूल पर भी होते हैं तथा वे फूल मुरझाने पर भी मरते हैं तो क्या पौधा लगाने में भी दोष है? कृपया तर्कसंगत उत्तर दें? **श्वेता जैन, सुसनेर (म.प्र.)**

A. जैनधर्म में पूजा की दो पद्धतियाँ कही गई हैं - सचित्त पूजा व अचित्त पूजा। सचित्त पूजन पद्धति में भगवान के सम्मुख फूल चढ़ाए जाते हैं। अचित्त पूजन पद्धति के अनुसार फूल न चढ़ाकर अन्य सूखी द्रव्य सामग्री चढ़ाते हैं। अपने को जैन दर्शन के अनुसार दोनों पद्धतियाँ स्वीकार करनी चाहिए और अपने-अपने विचारों के अनुसार मन्दिर की परम्परा देखकर पूजा की पद्धति चुननी चाहिए। इसे बहस का मुद्दा नहीं बनाना चाहिए। रही बात जीवराशि के विघात की सो जैनधर्म में अहिंसा सर्वोपरि है। सद्गृहस्थ को त्रसजीवों की हिंसा व संकल्पी हिंसा से बचने का उपदेश दिया गया है तथा स्थावर जीव (जल, वायु, अग्नि, वनस्पति, पृथ्वी) का भी व्यर्थ अपव्यय या हिंसा नहीं करनी चाहिए। हमारे यहाँ तो मिनिमाइजेशन ऑफ वायोलेंस (Minimization of Violence) का ध्यान रखा गया है।

फूल के आश्रित त्रसजीवों की उत्पत्ति की संभावना ज्यादा रहती है इसलिए फूलों का उपयोग करने और पौधे की साज-सँभाल करने में बहुत सावधानी रखना जरूरी है। पौधे का अपना जीवन-चक्र (लाइफ

साइकल) है। उसे क्षति न पहुँचे ऐसा उपाय करना चाहिए। देखिए, फूल मात्र सौंदर्य की वस्तु नहीं हैं वे भी चेतनासंपन्न हैं। उन्हें भी सुख-दुःख का अनुभव होता है। अपने जीवनयापन के लिए वनस्पति का उपयोग करना एवं उन्हें व्यर्थ मनोरंजन के लिए काम में लेना - दोनों भाव दशा में अंतर है। सद्गृहस्थ को सावधानी रखते हुए जीवन जीने की सलाह दी गई है, संकल्पी हिंसा से बचने को कहा गया है। आप स्वयं निर्णय करें।

Q. क्या हमें भोजन एक स्थान पर बैठकर करना चाहिए? बार-बार खाने या चलते-फिरते खाने में क्या अंतर है?

नयन जैन, विदिशा

A. भोजन करने का ढंग भी हमारे जीवन की दिशा व दशा का सूचक है। अन्न को प्राण माना गया है। उसका सम्मान या आदर करना चाहिए। भोजन करते समय एक स्थान पर स्थिर होकर शालीनतापूर्वक भगवान का स्मरण करना चाहिए। कुछ लोग खाने के लिए जीते हैं और बार-बार खाते हैं। शुद्ध-अशुद्ध, भक्ष्य-अभक्ष्य का विवेक नहीं रखते, यह ठीक नहीं है। नीति में कहा गया है - “योगी खाय एक बार, भोगी खाय दो बार और रोगी खाय बार-बार।” हमें साधु या सद्गृहस्थ की तरह एक या दो बार भोजन ग्रहण करना चाहिए। बार-बार भोजन करना रोगी की पहचान है।

भोजन ग्रहण करने का उद्देश्य अपना जीवन ठीक से जीने, स्वस्थ व प्रसन्न रहते हुए परोपकार, दान-पुण्य, जप-तप करने के लिए है। व्यक्ति का जीवन इतना अस्त-व्यस्त नहीं होना चाहिए कि उसे भोजन के लिए भी शान्ति से ग्रहण करने का समय न मिले, चलते-फिरते भोजन ग्रहण करना पड़े।

भोजन के समय मन तनाव-मुक्त और शान्त होना चाहिए। मौन रहकर भोजन करने का विधान इसी कारण से है। रुचिपूर्वक शान्त भाव से किए गए भोजन का पाचन ठीक से होता है एवं पुष्टि (न्यूट्रीशन) और संतुष्टि (सैटिस्फ़ेशन) मिलती है।

Q. किसी बालक/बालिका के जन्म पर स्नेह-भोज करना तो ठीक है पर किसी की मृत्यु पर मृत्यु-भोज करना कहाँ तक ठीक है?

सोनम जैन, देवास (म.प्र.)

A. जन्म के उपलक्ष्य में यदि स्नेह-भोज करते हैं तो मृत्यु के उपलक्ष्य में मृत्यु-भोज भी ठीक माना जाना चाहिए। जैन दर्शन में तो समाधिमरणपूर्वक मरण करने को मृत्यु-महोत्सव कहा जाता है। देखिए, जन्म और मृत्यु दोनों के अवसर पर समान-भाव रखना ही श्रेष्ठ है। सुख-दुःख में समता का भाव रखने की हिदायत दी जाती है।

एक बात और है कि सुख-दुःख दोनों आदमी को अकेले ही भोगने होते हैं, लेकिन सामाजिक प्राणी होने के नाते आदमी अपने सुख-दुःख में अपने प्रियजनों को भी सम्मिलित करना पसंद करता है। विनोबा ने लिखा है कि सुख परस्पर बाँटो तो दूना हो जाता है और परस्पर दुःख बाँटो तो आधा रह जाता है। इसलिए सुख-दुःख दोनों के अवसर पर हमें समता भाव रखते हुए अपनी क्षमता के अनुरूप कार्य करना चाहिए। दिखावा या प्रदर्शन से बचना चाहिए। इतना अवश्य है कि मरण के अवसर पर ब्राह्मणों को भोजन कराने की परम्परा जैनधर्म-सम्मत नहीं है।

Q. विधवा विवाह को लेकर अलग-अलग मत हैं। कृपया स्पष्ट करें कि यह उचित है या नहीं। **रोहित जैन, नागौर (राज.)**

A. विधवा विवाह को विवाद का मुद्दा नहीं बनाना चाहिए। इसे स्वविवेक से हल करना चाहिए। अच्छा तो यही है कि ब्रह्मचर्य धारण करके शेष जीवन व्यतीत किया जाए। स्त्री-पुरुष दोनों के बारे में यह नियम समान रूप से है तो विवाद ही नहीं रहेगा।

यदि आपको कोई शंका या प्रश्न है, तो हमें लिख भेजिये। मुनिश्री द्वारा उसका उत्तर दिया जाकर शंका का समाधान किया जायेगा।

- सम्पादक

Young Jaina Award An Overview

There is some or the other latent quality in each one of us. To understand that latent quality and to focus on that is the talent. One's own efforts along with motivation, such as awards, praise etc. are effective in that direction.

The Young Jaina Award is one such motivation. The main objective of this award is to inculcate our cultural and moral values along with higher studies. This award may encourage the young student to strive for continuous development and making their lives better through social recognition and acceptance of their talent. With the blessing of Munishri Kshamasagarji - true disciple of Acharya Shri Vidyasagarji - this Young Jaina Award was first instituted in the year 2001 at Shivpuri (M.P.) on the auspicious occasion of the 2600th birth anniversary of Bhagwan Mahavir. In the first ceremony, students securing 75% and more marks in XII were felicitated by the Young Jaina Award-2001. Yogendra Jain of Nagpur (Maharashtra) secured the first position with 93.5% marks.

In the second function held at Jaipur, 1050 Jain students of X and XII were given Young Jaina Award-2002. Dhiraj Jain of Pondichery with 95.91% marks in all the State Board for XII examination and Darshak Shah, Gujarat with 92.8% marks in XII examination of CBSE got the first position. Ujjawal Vijay Mahatme of Nagpur and (Maharashtra) with 96.66% marks in the X in all States Boards and Aviral Jain of Nagpur (Maharashtra) with 96.4% marks in the X CBSE examination got the first Position.

In the Third ceremony held at Ramganjmandi (Kota - Raj.) 1025 students were given Young Jaina Award-2003. Chinmay Kothari, Jaipur (Raj.) with 96.8% marks in X secured the first position. Anthima Kasliwal (Pondichery) with 96.5% marks in XII Science, Namrata Nirmal of Bangalore with 95.0% marks in XII Commerce, Shashi Jain of Khanapur (Raj.) with 86.0% marks in XII-Arts got first position.

4th Young Jaina Award ceremony was organized in Ashoknagar (M.P.) in 2004. This year Maitree Samooh has honored 1427 Jain students from twenty Indian States and Union Territories Covering 17 Educational Boards. Among 2004 YJA list some awardees are worth a special mention. Alok Jain topped the overall merit list of Raj. Board with 94% marks and got selected in IIT-JEE, AIEEE, BITS Pilani in very first attempt. For XII Science, Sindhu S. (Chennai) with 97% in commerce group Neha Jain (Pondichery) with 95.92% & in Arts group Taruna Jain (Ganaur) with 88.20% were given toppers award. T.S. Sowmya (Tumkur) was at number one position in the Xth class with 95.68%.

In the fifth ceremony held at Morena, M.P. 1447 students were given Young Jaina Award 2005. 14 Boards of 19 states from all over the country were participated

in program. This was first time when convocation ceremony of senior awardees of 2001 & 2002 was organised. Out of 916 students of XII K. Patni (Kuchaman City, Raj.) 96.45% & Deepika Jain (Hyderabad, A.P.) 96.27% were highest scorer among overall YJA 2006 list. J. Rajiv Kumar, Chennai with 95.40% in Boys & Nikita Jain, Jaipur, Raj. in Girls with 95.20% were toppers for Xth class.

For the 6th Young Jaina Award Maitree Samooh honored 1198 Jain students from 21 Indian States and Union Territories Covering 17 Educational Boards. For XII Science, Rohit Jain (Agra) with 97.50% among boys & Megha Jain (Chhatarpur) with 94.88% among girls. in Commerce boys group Saurbh Badjate (Mandsour) with 93.11% and among girls Megha Jain (Damoh) with 92.88% & in Arts group Keshu Jain (Bamanpura) with 88.00% received toppers award. In 10th class, Abhinav Jain (Jaipur) with 98.20% among boys & Ankita Jain (Delhi) with 96.00% among girls were topped the list. For the 7th Young Jaina Award Maitree Samooh itself feeling honoured as near about 1500 youths are selected far different classes & streams. We are giving few highlights of the award in this issue.

WINNERS
of YJA 2007

1st Rank of the Boys & Girls in XII Std. on the basis of Normalise percentage & X Std. on the basis of percentage

1st in Science Faculty



Sandeep Jain
Bangalore



Garima Jain
Lucknow

1st in Commerce Faculty



Pratik Jain
Katrasgarh



Divya Patni
Ajmer

1st in Art Faculty



Akakshya Jain
Sagar



Kamini Jain
Khimlasa

1st in X Standard



Nishank Jain
Kota



Anushree Barjatya
Jaipur

Top Ten Position
XII ARTS
2007



STARS
of YJA 2007

Selection in Professional Courses with XII - 2007



IIT - JEE



Rohit Jain
Kolkata
Rank - 486/AIEEE-647



Siddharth Jain
Bhopal
Rank - 892/AIEEE-291



Nikhil Jain
Jaipur
Rank - 909

AIEEE / PET



J. Rajeev Kumar
Chennai
Rank - 1192/IIT/PMT



Varun Jain
Jaipur
Rank - 1650



Ashwini Kansal
Vidisha
Rank - 42



Pranshu Nahar
Bhilai
Rank - 78



Nikhil Kala
Jaipur
Rank - 285



Maulik Gandhi
Surat
CET-25



Shivani Jain
Surat
Rank - 161



Sonali Jain
Naila
Rank - 161

CPMT / PMT



Vaibhav Jain
Indore
Rank - 48/PMT-139



Saurabh Jain
Bijhuri
Rank - 306/CGPMT-18, RPMT-47



Abhishek Jain
Indore
Rank - 606



Mansi Shah
Vadodra
Guj. PMT-6/PMT-23



Srushti Sheth
Ankleshwar
PMT-23



Chandni Jain
Kolkatta, 89.60%



Akshay Jain
Sagar, 89.11%



Kanishka Jain
Guwahati, 89.00%



Usha Kiran
Hisar, 83.20%



Nitika Jain
Sagar, 83.11%



Kamini Jain
Sagar, 83.11%



Ekta Jain
Karrapur, 82.00%



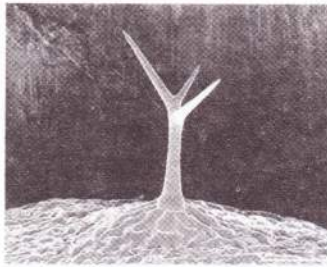
Poonam
Ganaur, 82.00%



Swatantra Jain
Shahpur, 81.78%



Shrasty Jain
Jeruwarkhera, 81.11%



**Top Ten Position
XII SCIENCE
2007**

Girls



Jayshree A
Chennai, 96.58%



Garima Jain
Lucknow, 96.17%



Charu Chitra S S
Nayveli, 95.08%



Narmada S
Kanchipuram, 93.83%



Vasudha Jain
Chhatarpur, 93.78%



Tripti Singhvi
Jodhpur, 93.60%



Uthira Kumari A
Chennai, 93.40%



Khyati Vakhariya
Bangalore, 93.40%



Vishwa Garima Bhartiya
Gwalior, 93.33%



C Vidhyalakshmi
Thiruvallangadu, 93.25%

Boys



Sandeep Jain
Bangalore, 96.83%



S Subash
Trichy, 96.33%



Aashish A
Chennai, 95.75%



J Rajeev Kumar
Chennai, 95.20%



Harshal Jain
Aurangabad, 94.33%



Praveen Jain
Malkajiri, 94.15%



Chetan S Ralekar
Karanja, 93.67%



Varun Jain
Shivpuri, 93.5%



Pranay Kumar Jain
Mumbai, 93.33%



Magdum Abhisek
Jaysingpur, 92.83%



Divya Patni
Ajmer, 96.40%



Nikita Jain
Jaipur, 94.80



Nikita Patni
Kota, 94.40%



Santosh Kumar G
Chennai, 94.33%



Ravina Jain
Kota, 94.00%



Shruti Jain
Saharanpur, 93.80%



Neha Jain
Udaipur, 93.20%



Anjali Jain
Nasirabad, 91.60%



Priya Sethi
Kishangarh, 91.40%



Anubha Jain
Ranchi, 91.40%



Nakul Jain
Bangalore, 95.50%



H. Praveen Kumar Jain
Hyderabad, 93.20%



Nikhil Jain
Amroha, 92.00%



Purvesh Choksi
Surat, 92.00%



Sagar N Sheth
Junagadh, 92.00%



Pramod Harari
Belgaum, 91.00%



A.P. Sukumar
Chennai, 90.60%



Anish Jain
Rewari, 90.22%



Rohit Jain
Dhulivan, 90.00%



Manan Jain
Jaipur, 89.00%

Girls



Boys

**Top Ten Position
XII COMMERCE
2007**

Girls



Shruthi G N
Bangalore, 97.28%



Anushree Barjatya
Jaipur, 96.83%



Mahima S D
Belgaum, 96.64%



Kanika Jain
Sonepat, 96.60%



Aashika Jain
Ambala Cantt, 96.20%



Neha Jain
Vidisha, 95.40%



Priyanka Jain
Sagar, 95.20%



B Padmapriya
Tindivanam, 95.00%



Kritika Jain
Shivpuri, 95.00%



S Sudiksha Sethia
Kovilpatti, 94.82%

Boys



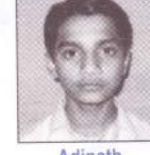
Nishank Jain
Kota Jn, 95.67%



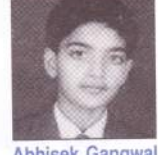
Ekansh Jain
Yamunanagar, 95.20%



Nishant.h.n.
Hassan, 94.72%



Adinath
Kunnur, 94.56%



Abhisek Gangwal
Jaipur, 94.33%



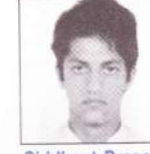
Nishit K Shah
Ahmedabad, 94.31%



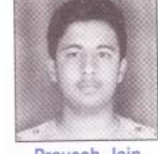
Anuj Jain
Jaipur, 94.00%



Praveen Jain K R
Chitradurga, 93.90%



Siddhant Prasad
Bangalore, 93.80%



Pravesh Jain
Jaipur, 93.60%



Top Ten Position
X CLASS
2007



Piyush Nahar
Jabalpur, IIT



Saurabh Jain
Ashoknagar, IIT



Pooja Jain
Kota, IIT



Ankur Jain
Bhilwara, IIT



Ankit Jain
Indore, IIT



Vaishali Jain
Kota, IIT



Saurabh Jain
Bhopal, BE



Pankhri Singhai
Delhi, BE



Shweta Jain
Durg, BE



Anshu Pahadiya
Indore, BE



Swati Jain
Faridabad, BE



Ritesh Jain
Jabalpur, BE



Ravikant Jain
Mandla, BE



Neha Jain
Shivpuri, BE



Princy Patni
Shajapur, BCA



Richa Jain
Jaipur, B.Sc.



Punit Jain
Kodarma, B.Sc.



Sonam Jain
Bhopal, B.Sc.



Prachi Jain
Jaipur, B.Sc.



Shilpa S Patil
Nashik, B.Sc.



Abhinav Surana
Jodhpur, LL.B. Hons.



Varun Jain
Jaipur, BBA



K Swati Jain
Hyderabad, B.Com.



Garima Jain
Jaipur, B.Com.



Gyandhara Jain
Lakheri (Bundi), BA



Rachna Jain
Sagar, BA

Senior Awardees of
YJA
Meritorious Position
in
GRADUATION
2007
&
SENIORS



Achievements

Senior Awardees of YJA
Meritorious Position in
**POST-GRADUATION
2007**



Poojashri Jain
Ujjain
MBA, 91.51%
Gold Medalist



Vishal Jain
Patna
MBA, 83.5%



Swati Jain
Shivpuri
M.Sc., 82.07%



Shikha Jain
Shivpuri
M.Sc., 79.8%



Priyanka Jain
Sagar
M.Com., 73.4%



Mohit Jain
Lalitpur
CPMT-365



Akanksha Jain
Jaipur
CPMT-155, RPMT-48



Nidhi Sanjay Kala
Selu, Parbhani
PMT-447



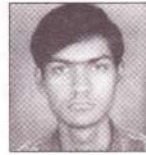
Pankaj Singhai
Lalitpur
PMT-265



Ankita Patni
Jaipur
RPMT-38/CPMT



Arnima Jain
Indore
PMT-137/CPMT



Manav Jain
Jaipur
CPMT-1069, RPMT-449



Prajakta M Mule
Aurangabad
PMT-1365



Ankisha Jain
Gwalior
DMAT



Somya Jain
Bhopal
DMAT



Anjali Jain
Sagar
B.Pharm



Ishan Jain
Durg, IIT-123, PET-6,
AIEEE-946



Abhishek Jain
Kota
IIT-483, AIEEE-319



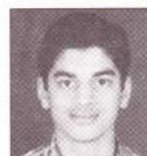
Chinmay Jain
Kota
IIT-1788, AIEEE-732



Sakshi Jain
Kota
AIEEE-4975



Amit T Jain
Kolhapur, CPT-1



Siddharth Rutiya
Jodhpur, CPT-15



Shreni Mehta
Banswara, CPT-18



Prachi Jain
Jaipur, CPT-19



ACHIEVERS

Senior Awardees of
YJA 2006
Selection in
**PROFESSIONAL
COURSES
2007**

गौरव

तुम्हारे हृदय प्रेम से
 आभा मण्डल में और
 प्रवेश करते ही मस्तिष्क ऊर्जा से
 तुम्हारी निर्मल दृष्टि शांत हो जाता है
 पड़ते ही अंतस का कोलाहल
 तुम्हारे चरण गल जाती हैं
 और मन के
 मेरे मस्तिष्क की दूरी मैल की परतें
 न्यून होते ही लौट आता हूँ मैं
 और मुस्करा के अपने आशीर्वाद के पात्र
 तुम्हारा पूछते ही होने का
 कि कब आए 'गौरव' लेकर
 भर जाता है... - अनुराग जैन, गंज बासौदा

मैं चाहता हूँ

मैं चाहता हूँ..... अन्तरिक्ष को
 आकाश से उतरी कोई किरण मेरी हँसी से गुंजाता
 जो मेरी एक निर्मल अन्तःकरण।
 आँखों की उजलाहट को छू ले। मैं चाहता हूँ...
 नदी की कलकल से स्पन्दित बिछा दूँ हृदय पुष्प
 एक अलौकिक मौन बाँध दूँ वन्दनवार
 जो मेरे भीगी आँखों से सजाऊँ
 मन आँगन को निखार दे। आँसुओं के हार
 मन्दिर के निस्तब्ध वातावरण में पहन लूँ पैरों में घुँघरू
 गुँजता हुआ ओम का नाद देहरी के बाहर फेंक दूँ
 जो मेरे भीतर भर दे अपना मन, बुद्धि, अहंकार।
 अनन्त आकाश का और स्वागत करूँ -
 प्रतिबिम्बित सम्वाद। उस अद्भुत, अनिर्वचनीय अज्ञात
 मैं चाहता हूँ.... सागर का जो
 एक सौन्दर्य-बोध गुरुवर की आँखों में
 एक मुक्ताकाश शांत होकर लहरा उठा
 एक ऊर्ध्वाकांक्षी चेतना हमारे अन्तःपटल पर
 एक महाप्रकाश। और मुखरित हुआ वाणी से
 प्रसुप्त संभावनाओं का स्फुरण चेतना के पत्रों पर।
 - डॉ. एस. के. जैन, टीकमगढ़

Young Jaina Award 2007

STATISTICAL REVIEW

Total Number
of Awardees
1488

Girls	833
Boys	655
X Class	668
More Than 95%	11
More Than 90%	154
XII Class (Art)	38
More Than 85%	3
More Than 80%	11
XII Class (Commerce)	299
More Than 95%	2
More Than 90%	24
More Than 85%	53
More Than 80%	100
XII Class (Science)	483
More Than 95%	7
More Than 90%	51
More Than 85%	147

State/Union Territories	Boards
1. Andhra Pradesh	Andhra Pradesh State Board
2. Assam	CBSE
3. Bihar	Delhi State Board
4. Chhattisgarh	GSEB
5. Dadra & Nagar Havelli	Haryana State Board
6. Delhi	ICSE
7. Gujrat	Karnataka State Board
8. Haryana	Maharashtra State Board
9. Jharkhand	Madya Pradesh State Board
10. Karnataka	Rajasthan State Board
11. Madya Pradesh	Tamilnadu State Board
12. Maharashtra	Utter Pradesh State Board
13. Rajasthan	
14. Tamilnadu	
15. Utter Pradesh	
16. West Bengal	
17. Punjab	
18. Pondicherri	
19. Goa	
20. Nagaland	

बच्चों को बाजार की माँद से बचाएँ

यह वाक्य ढाई हजार साल पहले उस समय के यूनान के एक दार्शनिक का है जब उसकी राजधानी एथेंस की आबादी महज पाँच हजार थी। यह वाक्य उस समय का है जब आदमी के पास करने के लिए न तो इतने सारे काम थे और न ही आज की तुलना में एक प्रतिशत भी भौतिक सुख-सुविधाओं की मौजूदगी ही थी, जिसे हासिल करने के लिए आदमी को सबकुछ छोड़-छाड़कर काम करते रहना पड़े। ढाई हजार साल पहले कहा गया यह वाक्य था - “हे



नागरिको, तुम अपने बाल-बच्चों को छोड़कर रात-दिन पत्थर तोड़ने में क्यों लगे रहते हो। आखिर तुम यह सबकुछ उनके लिए ही तो कर रहे हो।” और एथेंसवासियों को संबोधित यह वाक्य था सुकरात का। उस सुकरात का जिसने सत्य के लिए जहर का प्याला पीना इसलिए मंजूर कर लिया था कि अन्यथा ‘लोग उसकी कही गई बातों पर विश्वास नहीं करेंगे।’ तो क्या हमें सुकरात के इस वाक्य पर विश्वास नहीं करना चाहिए?

भोपाल के कैम्पियन स्कूल के फादर मेरियनस केरकेट्टा ने अपने बच्चों के लिए पाँच दिवसीय कार्यशाला के साथ-साथ उन बच्चों के अभिभावकों के लिए भी दो दिन की अलग-अलग कार्यशालाएँ आयोजित की थीं। यह एक अद्भुत अवसर था और अद्भुत अनुभव भी। बच्चों की अपने अभिभावकों से अलग तरह की शिकायतें थीं तो दूसरी ओर अभिभावकों की अपने बच्चों से भी। दोनों वर्ग उतने ही सही थे जितने कि दोनों वर्ग गलत थे। दोनों उस बिन्दु पर सही थे, जिस बिन्दु का संबंध उनकी शिकायतों से था। लेकिन दोनों उस बिन्दु पर गलत थे कि दोनों ही अपने आपको सही और दूसरे को गलत समझ रहे थे।

विद्यार्थियों की शिकायतों के केन्द्र में दो बिन्दु थे : पहला - अभिभावकों द्वारा ठीक ढंग से ध्यान न दिया जाना तथा दूसरा - पढ़ाई का अत्यधिक दबाव। अभिभावकों की शिकायतों के केन्द्र में थे - बच्चों की अनुशासनहीनता, जिद्दीपन, बड़ों का सम्मान न करना, इंटरनेट और टीवी से चिपके रहना तथा अन्य थोड़ी-बहुत चरित्रगत कमजोरियाँ।

इन दोनों की समस्याओं को पीढ़ियों के द्वन्द्व के रूप में इसलिए नहीं देखा जा सकता, क्योंकि पीढ़ियों का यह अन्तराल हर युग में रहा है और

आगे भी रहेगा। इसलिए यह कोई द्वन्द्व या समस्या न होकर समाजगत सत्य ही है। इस समस्या की जड़ में विद्यार्थी और उसका बाह्य परिवेश तो है ही, किन्तु उससे कहीं अधिक हम स्वयं अभिभावक भी हैं। बच्चों को उनकी इस अबोधता का मार्जिन दिया जाना चाहिए कि ‘वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।’ बाह्य सामाजिक परिवेश; जिसमें हम आज संचार माध्यमों के दबाव को विशेष रूप से महसूस करते हैं, इस रूप में मार्जिन दिया जा सकता

है कि उनके पास बाजार का अपना फार्मूला है। तो अब बच जाते हैं अभिभावक ही; जिन्हें किसी भी तरह का कोई मार्जिन इसलिए नहीं दिया जा सकता, क्योंकि वे जहाँ एक ओर परिपक्व हैं, वहीं दूसरी ओर उन पर खुद को और खुद के बच्चों को इस बाजार नामक शेर की उस माँद में प्रवेश करने से बचाने की जिम्मेदारी है, जिसमें जाने के पैरों के निशान तो मिलते हैं, लेकिन लौटने के पैरों के निशान नहीं मिलते।

अभिभावक के रूप में हमें अपने बच्चों को केन्द्र में रखकर स्वयं से ही कुछ प्रश्न पूछने चाहिए, और उन सभी के उत्तर स्वयं ही निर्ममता, तटस्थता और एक न्यायाधीश के रूप में देने की कोशिश की जानी चाहिए। पहला प्रश्न तो यही है कि क्या सचमुच बच्चे हमारी प्राथमिकताओं की सूची में पहले स्थान पर हैं? यदि हैं तो हम उनके लिए संपूर्णता के साथ वह सब क्या कर रहे हैं, जो सचमुच में किया जाना चाहिए? क्या अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़ा देना, बच्चों की फीस जमा कर देना, उन्हें जरूरत और उनके लिए सुविधाओं की सारी सामग्री जुटा देना तथा उन्हें अपनी इच्छानुसार काम करने की इजाजत दे देना भर पर्याप्त है? यह बात इसलिए कही जा रही है, क्योंकि आज के अधिकांश अभिभावक यह सब कर रहे हैं। यहाँ तक कि अपनी आर्थिक स्थितियों को दरकिनार करके भी ऐसा कर रहे हैं। बच्चों से बातचीत में यह पाया गया कि इसके बावजूद जो वे सबसे बड़ी कमी महसूस करते हैं, वह है - ‘केयरिंग’ की। अभिभावक के रूप में हम उन्हें यह महसूस कराने में असफल हो रहे हैं कि हम तुम्हारी ‘केयर’ करते हैं। उनके अंदर भावुकता के इस भीगे हुए जलबिन्दु को डाल पाना सबसे अधिक जरूरी लगता है। और यही वह जलबिन्दु है, जिसका गीलापन अभिभावकों की अंतिम साँस तक उस

बच्चे को अपने माता-पिता से जोड़े रखता है। सन् 1973 में आई राजकपूर की फिल्म 'बॉबी' की शुरुआत ही इसी संदेश के साथ की गई है।

आज के बच्चे बेहद दबाव और तनाव में हैं। बच्चों से अधिक हम अभिभावक उनके सामने पैकेज की बात कर-करके वार्षिक आय को ही उनकी जिंदगी की उपलब्धियाँ तथा जीवन के सुख और आनन्द का पर्याय बताते रहते हैं। इस पैकेज की प्रत्याशा में ही हम अभिभावक अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए अविवेकपूर्ण तरीके से येन-केन-प्रकारेण कितना भी धन खर्च करने में पीछे नहीं हटते, जिसमें कोचिंग संस्थाओं में भेजने और ट्यूशन पढ़वाने तक की मोटी रकम शामिल है। बाजार में जिस प्रोफेशन की माँग ज्यादा है, हम बच्चों को उसी के लिए बाध्य करते हैं, इस बात की पूरी तरह अनदेखी करके कि बच्चा उसे चाह भी रहा है या नहीं। अरुचिकर विषय और पढ़ाई के दबाव के इस विचित्र दुष्चक्र में यह बच्चा इस कदर फँस जाता है कि उसको अपनी जिन्दगी की भावनाओं के प्रस्फुटन, व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास और अपने कल्पना जगत को विस्तार देने के लिए अवकाश ही नहीं मिल पाता। सुबह जल्दी उठना, स्कूल जाना, घर लौटकर खाना खाने के बाद कोचिंग जाना, लौटकर खाना खाने के बाद होमवर्क करना, फिर सोकर भयावह स्वप्न देखना - यह उसके एक-दो महीने की नहीं, बल्कि कई-कई साल की सतत दिनचर्या बन गयी है। हम अभिभावक इसे अपने बच्चे की कर्मठता और लगन मानकर गलतफहमी में खुश होते रहते हैं। और वह बच्चा अपने अभिभावकों को खुश करने के लिए चुपचाप इस भावनात्मक दबाव और बाजार के षड्यंत्र का शिकार होकर धीरे-धीरे अपने ही अभिभावकों का विरोधी बन जाता है। इन भयानक दबावों का जिम्मेदार वह अपने अभिभावकों को समझता है, जिसे वह व्यक्त नहीं कर पाता। इसी की अभिव्यक्ति इन विद्यार्थियों की चिड़चिड़ेपन, खीझ, अनुशासनहीनता, रॉक म्यूजिक, डिस्को डांस, नशा तथा अन्य कई प्रकार की उन चेष्टाओं में होती है, जिन्हें हम सामूहिक रूप से बदतमीजी की संज्ञा दे देते हैं। बच्चा बाहर से अनेक तरह के दबाव में जी रहा है। साथ ही परिवार के 'केयरिंग' के अभाव में उसके अंदर एक शून्य फैलता जा रहा है। इसी शून्य को भरने के लिए वह अपने घर की देहरी लाँघकर बाहर 'वेलेंटाइन डे' के उत्सव में आश्रय ढूँढ़ता है। चूँकि वह घर में मिलने वाले आश्रय को नहीं समझ पाता, इसलिए वह एक प्रकार से रिबेलियन हो जाता है और जाने-अनजाने में हर वह काम करना चाहता है जिसे उसके माता-पिता नापसंद करते हों, ताकि वह उनसे अपनी उपेक्षा का बदला ले सके।

कार्यशाला के दौरान मुझे लगा कि यह समस्या बहुत गंभीर गहरी है। लेकिन मुझे यह भी लगा कि इस समस्या का समाधान उ गंभीर और गहरा नहीं है। यदि किसी भी तरह हम अपने बच्चों को विश्वास दिला सकें कि तुम हमारी प्राथमिकता की सूची में सर्व स्थान पर हो और हम तुम्हारी केयर करते हैं तो इस समस्या के निराव का रास्ता निकल सकता है। लेकिन यह अनुभव हमें भावनात्मक पर कराना होगा और इसके लिए अपने बच्चों को अपना रचना समय भी देना होगा। महज सुविधाएँ उपलब्ध कराने से कर्तव्य इतिश्री नहीं हो सकती। अपने बच्चों को स्वयं की अतृप्त इच्छाओं पूर्ति का एक माध्यम बनाना मुझे बेहद अमानवीय और अप्राकृतिक लगता है। उसे खुला छोड़ना होगा। उसे नौकरी की नहीं, जिन्दगी परिभाषा बतानी होगी। बच्चे को अध्ययन के दबाव से मुक्त करके अपने व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के अवसर देने होंगे, ताकि वह अच्छा सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने से कहीं अधिक एक अच्छा खुशहाल इंसान बन सके। शायद सुकरात भी यही कहना चाह रहे ह

- डॉ. विजय अग्रव

बच्चों से संवाद की कमी

समाज में दिनोंदिन असुरक्षा की भावना बढ़ती जा रही है और यह असुरक्षा इस कारण बढ़ रही है, क्योंकि अब हमारे मापदण बदल गए हैं। अब सबकुछ पैसों से तौला जाता है और इसकी कोई सीमा नहीं है। बच्चों को भी यही बताया जाता है कि अच्छे पढ़ाई करोगे तब अच्छी नौकरी करोगे और फिर खूब पैसा मिलेगा। दरअसल, माता-पिता अपनी आकांक्षाओं को बच्चों में देखते हैं। इस कारण परेशानी आरम्भ होती है। एक पक्ष यह भी है कि माता-पिता के पास बच्चों के साथ सही तरीके से संवाद करने के लिए समय ही नहीं है। इसका परिणाम यह होता है कि अगर बच्चा गुस्सा करके कुछ वस्तु माँगे तो माता-पिता वह तत्काल पूर्ण व देते हैं, क्योंकि उनके पास बच्चे की असली जरूरत समझने व समय कहाँ है। इसके अलावा बच्चों के सामने टीवी के कार अच्छे व बुरे दोनों रोल मॉडल सामने रहते हैं। बच्चे अपनी समस्या के मुताबिक इसे ग्रहण करते हैं। हमें बच्चों को यह समझाना चाहिए कि समाज में सभी का काम अलग-अलग होता है और केवल पैसा कमाना ही सबकुछ नहीं होता। उनके साथ संवाद काय करके उन्हें यह बताया जाना चाहिए कि जिन्दगी जीने के पैसा और भी होते हैं।

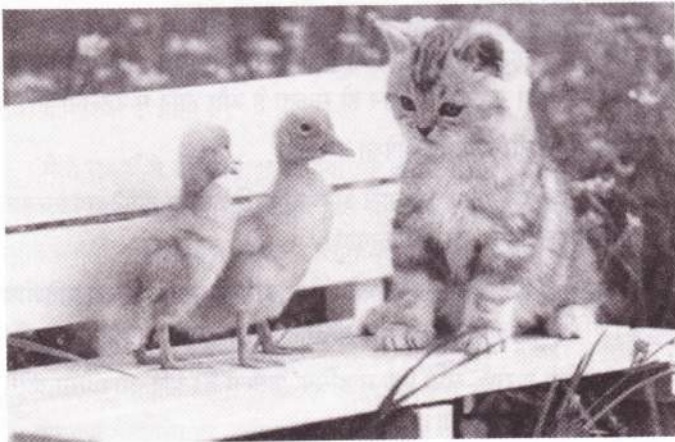
- डॉ. दीपक मंशारमानी, मनोचिकित्सक

VICTIMS OF DESIRE

Once there lived a man who needed no associations, bondages and wished to lead an austere life. People called him 'sadhu' and he was respected by all, including the king of the kingdom. The only thing that he kept with him was a white dhoti. Soon he realized that the dhoti got dirty very easily and had to be washed regularly. Hence he desired another dhoti which he could wear while the white dhoti dried in the sun.

One afternoon, he found a rat gnawing at his dhoti. This got him worried and he thought of having a pet cat to take care of the rat. He soon had a cat but his anxiety didn't attenuate. The cat needed milk and used to drink what sadhu baba drank himself. Fed up with this, the sadhu went to the king and requested for a cow. The king presented a cow to sadhu and now sadhu baba had plenty of milk and allied dairy products for himself and his cat. The world seemed to be as comfortable as never before.

But the cow needed fodder to give milk. Sadhu once again went to the king and got a piece of land. He started farming to maintain the land. Now he had plenty of food for himself and fodder for his cow. Life seemed to be at best now. But the problems didn't seem to die as easily. Soon, the sadhu realized that he would need a partner to share his joys and sorrows and to take care of the cow and cat when he would be in the farm. He married a beautiful girl and started leading a joyful conjugal life. The couple had a baby and 3 more in later years. The sons led their lives governed by the need to fulfill their desires. They had their children who gave birth to their children and generations followed and then finally



CHIRPING SPARROW

you, me and all of us, all following the protocol set by the sadhu.

Oh! Yes, we all have the same ancestry and we all do the same thing our entire life, ie amassing possessions to counter various desires. Ask any human about his wants and desires and he would holler: I want to earn a lot of money, want to be successful, famous, have a nice house, all the luxuries, nice family and friends and the list continues.

What's the explanation for desiring so? Yeah, one single motive- happiness and satisfaction. That's what even the sadhu yearned for. This is the funda no. 1 - 'everyone wants to be happy'. Different people follow different paths, do different things, attain whatever they can just to be happy. This is how we lead our lives searching and yearning for happiness. We enter a wild goose chase.

What's the problem then? In spite of all the goods we acquire, we can't find a source of eternal happiness. Our mines give us but a transient happiness. There is a struggle to get our desired things, pressure to maintain them and despair when they go away or are destroyed. They, thus, provide happiness coated with anxiety and misery just as the edge of a sword coated with honey.

I run my entire youth to get educated, to earn a lot of money. Then I think of investing money to preserve and increase it. When I see my wealth leaving me , I get poignant and run to get some more. This is how my mind, words and body work not just for money but for all other assumed materialistic sources of bliss. When I have none, I need little, when I have little , I need some more, when I have some more , I need more , then I need even more and so I traverse into the delusional vicious circle of wealth, whose massive girth engulfs all of us-the rich and the poor-equally.If money could give me satisfaction, then all rich people would be eternally happy. But this is what I don't find or observe around me. I find the rich equally engrossed in the sea of desolation as the poor and sometimes even more distressed to augment their wealth. A similar kind of vicious circle is associated with all other sources.

- Aviral Jain, Nagpur MHS 4004

क्षमा मुक्ति का अनुभव

क्षमा की प्रक्रिया एक मुक्ति का अनुभव हो सकता है। यदि इसका अभ्यास ऐच्छिक रूप से हो तो यह जीवन को एक अद्भुत अनुभव की ओर ले जा सकती है। रोचक बात यह है, क्षमा सिर्फ इसलिए किया जा सकता है, क्योंकि हमें विकल्प चुनने की योग्यता का वरदान मिला हुआ है। पर हमारे पास माफ करने या न करने का विकल्प है और कोई भी हमें इन दोनों में से कुछ करने के लिए जबर्दस्ती नहीं कर सकता। इसके विपरीत यदि हम किसी को क्षमा करना चाहें तो कोई कितनी भी कोशिश कर ले हमें नहीं रोक सकता। क्षमा करने की योग्यता हमारे जीवन पर नियंत्रण की अभिव्यक्ति है। हमें इतने महत्वपूर्ण चुनाव करने का सम्मान मिला है।

हालाँकि हममें से अधिकतर के लिए क्षमा करना एक कठिन निर्णय है। कल्पना कीजिए हमारी जिन्दगी कैसी होगी यदि हम अपमान पी जाने की या चुनाव करने की शक्ति का बहुत कम या बिल्कुल नहीं प्रयोग करें। कैसा हो यदि क्षमा करने की जरूरत ही कम हो जाए यानी हम ऐसा स्वभाव बनायें कि क्षमा का लेन-देन न्यूनतम हो जाए तो परम शांति होगी या नहीं?

क्षमा और प्रतिक्रिया के बीच आप चार अवस्थाओं से गुजरते हैं। पहले-पहल आपको किसी ने चोट पहुँचाई है या आपके साथ गलत किया है उस पर आपको स्वाभाविक क्रोध होता है। आपको लगता है आपके क्रोध का कारण उनका बर्ताव है न कि आपकी प्रतिक्रिया करने का चुनाव। आप इतने क्रोधित हैं कि आप आश्वस्त हैं कि उस अपराध को क्षमा करना सही नहीं है। इस अवस्था में अक्सर सक्रिय और छुपा हुआ क्रोध होता है।

दूसरी अवस्था तब आती है जब क्रोध का एहसास होने पर आप महसूस करते हैं कि क्रोधित होकर आपको खुद को अच्छा नहीं लग रहा। यह आपके भावात्मक संतुलन या शारीरिक स्वास्थ्य को बिगाड़ रहा है या फिर रिश्ते में हुए नुकसान को सुधारना चाहते हैं इसलिए आप क्षमा करने की सोचते हैं। आप समस्या को दूसरे के दृष्टिकोण से देखने लगते हैं या फिर आप निर्णय करते हैं कि 'अब छोड़ो भी इसे।' दोनों स्थितियों में आप एक समय के बाद नाराज नहीं रहते।

क्षमा की तीसरी अवस्था वह है जब आप क्षमा करने के हितकारी परिणाम देख लेते हैं। तब आप गुस्से को जल्दी शांत करना चुनते हैं। आप माफ करने का निर्णय लेते हैं, क्योंकि आपको इसका अभ्यास हो गया होता है और उसका जीवन में लाभ भी देखते हैं। सड़क पर ओवरटेक किए जाते समय या शादी के बाद किसी तनाव पर आपकी यह स्थिति होती है। आप गुस्सा कम करना सीख चुके होते हैं।



क्षमा कार्यों के लिए नहीं है।

- महात्मा गांधी

क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।

- रामधारी सिंह दिनकर



क्षमा एक ओर वार्धक्य की परिपक्वता है, बुद्धिमत्ता है और दूसरी ओर बालसुलभ सरलता है। सच्चा संत बच्चों जैसा सरल होता है, निष्कल होता है। व क्षमा करते हुए अकड़ता नहीं कि देखो, मैंने माफ क दिया। हमारे देश में एक कहावत है : छिमा बड़न क चाहिए...। सच्चे अर्थों में केवल वही व्यक्ति परिपक्व होता है जिसके हृदय में क्षमाभाव है, करुणा है, प्रेम है। ऐसे बोध को उपलब्ध हुआ व्यक्ति ही बुद्धपुरुष है, प्रज्ञापुरुष है।

चौथी अवस्था में गुस्सा कम से कम करना और क्षमा भाव बनाना है अक्सर ऐसे में कुछ विचार आते हैं :

- गुस्सा करके मैं जीवन का झंझट बढ़ाना नहीं चाहता।
- मुझे पता है कितना कष्ट होता है जब लोग मुझे माफ नहीं करते। मैं दूसरों को खुद के क्रोध से कष्ट पहुँचाऊँ, यह क्या जरूरी है?
- लगता है मैं पटरी से उतर गया।
- लोग अच्छा ही करना चाहते हैं, कभी-कभी गलती हो जाती है।
- स्वाभाविक रूप से सब अपनी-अपनी परवाह करते हैं, मैं भी करता हूँ इसलिए सामने वाले के स्वार्थ में अस्वाभाविक कुछ नहीं है।

हम क्या कर सकते हैं :

1. जो हुआ उसके बारे में आप कैसा महसूस कर रहे हैं, वह जानें और यह स्थिति ठीक नहीं है, इस बारे में सुस्पष्ट रहें। अपने भरोसेमंद व्यक्ति को अपने अनुभव के बारे में बताएँ।
2. अच्छा महसूस करने के लिए खुद से वादा करें कि जो आप करना चाहते हैं वही करेंगे। क्षमा आपके भले के लिए है किसी और के लिए नहीं।
3. आप चाहते हैं शांति। इसका तोड़ कहीं है?
4. अभी जो हाल है उस पर विचार करें, उस क्षण पर नहीं जब आपको चोट पहुँची थी। उसका 'रिप्ले' आपको और दुःखी करेगा।
5. जिस क्षण आपको अशांति महसूस हो तो तनाव प्रबंधन की तरकीब का अभ्यास करें। यह योग आसन हो सकता है और लॉन में टहलना भी।
6. दूसरों से किसी चीज की अपेक्षा न रखें।
7. अपनी ऊर्जा को अपने कष्ट वाले अनुभवों से निकलकर अपने सकारात्मक लक्ष्यों को पाने के रास्तों में लगाएँ।
8. याद रखें - अपने जीवन को अच्छे ढंग से जीना ही सबसे अच्छा प्रतिशोध है। यदि कष्ट जारी रहा तो चोट पहुँचाने वाला सफल होगा, आप नहीं।
9. अपना रोना न रोएँ, क्षमा एक साहसिक फैसला है। यदि आप ऐसा करेंगे तो रास्ता आसान होगा।

Chirping Sparrow हमें भौतिकता के इस युग में एक नयी राह दिखाती है। वह हमें जीवन के नये दृष्टिकोण में देखना सिखाती है। Chirping Sparrow पढ़ने से पहले नहीं पता था कि किस तरह से संसार की रचना हुई है, थोड़ा-बहुत पता था उसमें संशय बहुत था। पर आपके जवाब की संसार, ये पृथ्वी शाश्वत है, ने मन के बहुत सारे संशयों को दूर कर दिया। मैंने Chirping Sparrow पढ़ने वालों के लिए कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं :

जिन्दगी में कठिनाइयाँ तो बहुत आएँगी,
पर हिम्मत से आगे बढ़ना सदा तुम।
जिन्दगी में मिलें नफरतें अगर,
तो उन्हें प्यार से जीतते चलो तुम।
जिन्दगी में मिलती है दुआ और प्रेम भी,
उन्हें स्वयं में सहेज कर रखो तुम।
जिन्दगी नहीं होती ठहराव का नाम,
इसलिए हर पल आगे बढ़ते रहो तुम।

स्वीटी जैन, मुंगावली

आपके द्वारा प्रेषित Chirping Sparrow हमें प्राप्त हुई। इसे पढ़ने के बाद पुनः मन में हर्षोल्लास की लहर दौड़ उठी और मन को एक नयी खुशी मिली। हमारे घर में सभी को Chirping Sparrow बहुत पसन्द है, क्योंकि वास्तव में यह एक ऐसा न्यूज लेटर है, जिसका एक-एक शब्द ज्ञान से परिपूर्ण है, और साथ में हमारे ज्ञान को भी बढ़ाता है। वास्तव में इस न्यूज लेटर में प्रेषित सन्देश 'गागर में सागर' भरने के समान है।

अपूर्वा भारिल्ल, गंजबासौदा

इस बार मुझे न्यूज लेटर लेट मिला, तो मैं बहुत उदास हो गई, रोज इस न्यूज लेटर आने का इन्तजार करती रही। मेरे आस-पास के लोग और परिवार के सदस्य जब मुझसे पूछने लगे कि इस बार तुमने हमें न्यूज लेटर पढ़ने नहीं दी तब मुझे बड़ा दुःख होता, लेकिन आज जब यह मेरे हाथ में आयी तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा।

मैं सदा इसको अपने आँगन में चहचहाती देखना चाहती हूँ। इससे मुझमें बड़ा आत्मविश्वास आता है। यह छोटा-सा दिखने वाला न्यूज लेटर कई लोगों को प्रेरणा दे जाता है।

'मैत्री समूह' ने जो कार्य शुरू किया वह काफी सराहनीय है, मैत्री समूह के वे सभी विद्यार्थी कभी भी उपकार नहीं भूल पायेंगे, जो आर्थिक दृष्टि से अभावग्रस्त होने के कारण अच्छी कोचिंग के नोट्स प्राप्त नहीं कर पाते थे। अब वह घर पर बैठकर अच्छी तरह से अपनी तैयारी कर पायेंगे।

मैं उन युवाओं से कहना चाहूँगी कि जीवन की धारा को बदलें। क्षमता तो आप सबमें है, आवश्यकता है केवल आत्मविश्वास की, आत्मसात् करने की। तुम एक महातरंग हो, खुद को पहचानो, खुद को समझो, तुममें अनन्त

सम्भावनायें हैं। विश्वासपूर्वक कदम उठाओ (पहली बार में नहीं, दूसरी बार में नहीं तो तीसरी बार में सफलता के एवरेस्ट पर पहुँच ही जाओगे। दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़िये, सफलता जरूर मिलेगी।

बच्चे अपना कार्य स्वयं करना सीखें। आप ऐसा पौधा न बनें कि जिसमें पानी दिया जाए तब ही वह पल्लवित हो। तुम तो जंगल का ऐसा पौधा बनो कि जिसे कोई पानी देने वाला न पहुँचे तब भी वह कुदरत से अपने पानी की व्यवस्था खुद कर ले।

अर्चना जैन, अशोकनगर

I heartily thankful to you for sending me such a nice newsletter. I also very thankful for publishing my letter in news letter.

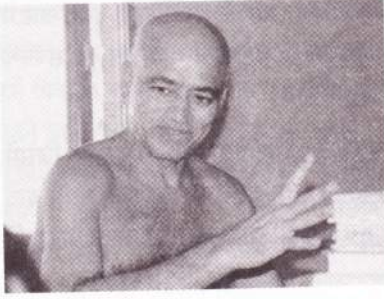
I really impressed by the attempt of "Beauty without Cruelty". I too believe in one thing that if we can't give life to somebody than we don't have a right to snatch it. As soon as I complete my graduation I will take active part in these noble activities of the Maitree Samooh.

Pranay Sanchit Raj

आपसे अनुरोध

- Young Jaina Awardee 2007 के लिए यह न्यूजलेटर Chirping Sparrow एक वर्ष तक निःशुल्क भेजा जाएगा।
- Young Jaina Award 2007 एवं न्यूजलेटर प्राप्ति की सूचना हमें अवश्य दें।
- हमसे पत्राचार करते समय हमेशा अपने रजिस्ट्रेशन नम्बर का उपयोग करें।
- पत्रिका के बारे में अन्य कोई सुझाव हों तो हमें अवश्य अवगत करायें।
- अपना पता, फोन नम्बर, ई-मेल बदलने पर तत्काल हमें सूचित करें।
- "Chirping Sparrow" आप हमारी वेबसाइट www.maitreesamooh.com पर भी देख सकते हैं और प्रिंट ले सकते हैं।
- मैत्री समूह से सम्बन्धित अन्य जानकारी हेतु www.maitreesamooh.com पर Visit करें।
- मैत्री समूह का सम्पर्क नम्बर 09425424984 तथा ई-मेल maitreesamooh@hotmail.com है।

निर्दोष-चर्या



आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज

वे आहार-चर्या के लिए निकले हैं। चलते-चलते निमिष-मात्र में मानो उन्होंने सारे परिवेश को देख लिया और धीमे, सधे हुए कदमों से, वे आगे बढ़ रहे हैं। मैं

उनकी इस सहज सजगता को देखकर चकित हूँ। सब ओर से एक ही आवाज आ रही है कि, “भो स्वामिन्! यहाँ पधारें, यहीं ठहरें। आहार-जल शुद्ध है।” सोच रहा हूँ कि यह श्रद्धा और प्रेम से दी जाने वाली भिक्षा अनूठी है। देने वाला अपना सर्वस्व देने के लिए उत्सुक है, पर पाने वाला इतना निश्चित है कि पाने योग्य जो है, वह उसके पास हमेशा से है। उसे अपने से अन्यत्र कहीं और, कुछ और नहीं पाना है। इस देह के निर्वाह और तप की वृद्धि के लिए जो मिलता है वह मिलेगा, उसे मिलाना नहीं है। प्रासुक आहार की मात्र गवेषणा है, आतुरता नहीं है।

देखते-देखते एक अतिथि की तरह, घर के द्वार पर द्वारापेक्षण के लिए खड़े श्रावकों के समीप, उनका ठहर जाना और आनन्द-विभोर होकर लोगों का उन्हें श्रद्धा भक्ति से प्रतिग्रहण कर भीतर ले जाना, उच्च स्थान पर बिठाना, पाद-प्रक्षालन करके चरणोदक सिर-माथे चढ़ाना, पूजा करना और मन, वचन, काय तथा आहार-जल की शुद्धि कहकर उन्हें विश्वस्त करना; झुककर नमोस्तु निवेदित करके आहार-जल ग्रहण करने की प्रार्थना करना, यह सब इतने सहज व्यवस्थित ढंग से होता रहा कि मैं मंत्र-मुग्ध सा एक ओर खड़े-खड़े देखता ही रह गया।

सुना है कि आहार में वे रस बहुत कम लेते हैं। मैं देख रहा हूँ कि ऐसा कौन-सा रस उनके भीतर झर रहा है, जो बाहर के रस को गैरजरूरी किए दे रहा है। एक गहरी आत्म-तृप्ति जो उनके चेहरे पर बरस रही है, वही भीतरी-रस की खबर दे रही है और मैं जान गया हूँ कि रस सब भीतर है। ये भ्रम है कि रस बाहर है। तभी तो बाहर से लवण का त्याग होते हुए भी उनका लावण्य अद्भुत है। मधुर रस से विरक्त होते हुए भी उनमें असीम माधुर्य है। देह के दीप में तेल (स्नेह) न पहुँचने पर भी उनमें आत्मस्नेह की ज्योति अमंद है। सारे फल छोड़ देने के बाद भी लोगों के लिए सचमुच वे बहुत फलदायी हो गए हैं।

उनकी संतुलित आहार-चर्या देखकर लगा कि शरीर के प्रति उनके मन में कोई गहन अनुराग नहीं है। वे उसे मात्र सीढ़ी बनाकर आत्मा की

ऊँचाइयाँ छूना चाहते हैं। शरीर धर्म का साधन है। उनकी कोशिश उ समर्थ बनाए रखकर शान्त भाव से आत्म-साधना करने की है। सोच रहे हैं कि शरीर को इस तरह आत्मा से अलग मानकर उसका सम्यक् उपयोजना कितना सार्थक, किन्तु कितना दुर्लभ है।

देख रहा हूँ कि एक सच्चे साधक की तरह वे आहार-चर्या समस्त विधि-विधान का पालन सहज ही कर लेते हैं। गर्तपूरण की तरह जैसे गड्ढे को भरने के लिए किसी विशिष्ट पदार्थ का आग्रह नहीं होता, ऐसे ही शरीर की जरूरत पूरी करने के लिए किसी विशिष्ट/स्वादि भोज्य पदार्थ का आग्रह उनके मन में नहीं है। अक्षप्रक्षण की तरह गाड़ी चलते समय आवाज न करे और धुरी ठीक से काम करती रहे, इसलिए कोई चिकना पदार्थ उस पर लगा दिया जाता है, ऐसे ही जी की यात्रा निर्बाध चलती रहे और देह ठीक काम करती रहे, इसी योग्य आहार वे करते हैं।

अग्निशमन के लिए जैसे खारा या मीठा कोई भी जल पर्याप्त है, ही क्षुधा-तृषा की तपन को शान्त करने के लिए सरस-नीरस जो भी नि आहार मिलता है, उसे शान्त भाव से वे ग्रहण कर लेते हैं। एक गाय तरह जो बगीचे में जाकर भी विविध फूलों के सौंदर्य या अपने लिए प डालने वाले के रूप-लावण्य को नहीं देखती और चुपचाप घास ख लौट जाती है, मैंने देखा कि वे श्रावक के बाह्य-वैभव से अप्रभा रहकर चुपचाप पाणिपात्र में दिए गए प्रासुक आहार का शोधन करके में एक बार खड़े होकर उसे ग्रहण करते हैं। यह गोचरी वृत्ति है।

आहार पूरा होने पर लोगों का आनन्दित होना और जय-जय के बीच उनका इस सबसे निर्लिप्त रहकर मुस्कराते हुए लौटना, अना ही साधु की भ्रामरी वृत्ति का स्मरण करा देता है। भ्रमर जिस गुनगुनाता हुआ आता है और फूल से पराग लेकर जैसे उसे हर्षित व लौट जाता है, ऐसे ही वे आत्म-संगीत में निमग्न होकर अत्यन्त नि भाव से आहार ग्रहण करते हैं और श्रावक को हर्षित करके लौट आते

उनके लौटने के बाद जाने कितनी देर तक मैं वहीं सिर झुकाए रहा, जब ख्याल आया तो देखा कि वे बहुत आगे/बहुत दूर निकल गए हैं। इतने आगे कि उन तक पहुँचने के लिए मुझे पूरी जिन्दगी उनके पीछे चलना होगा।

कुण्डलपुर (19

साभार - आत्म

Mind and Me

Bits and pieces of lost mind,
Wander & fit themselves flowlessly
Turn into a new mystery,
Only to sublime suddenly.

Continous and reforming,
Destroying and dissipating,
When cohesive & coherent,
It can be a great time.

Charged and activated,
Helpless and under estimated,
All happen in one life,
Only sides of the same coin.

Channelise & reap the best,
For this moment of time,
Try to keep the 'grip tight',
And everything will be fine.

- Nikhil Jain, Pune

गाँधी

गाँधी पहले तुम हजार के नोट पर दिखते थे
फिर पाँच सौ के नोटों पर दिख रहे हो,
अब तो आप दस, पाँच के नोटों पर भी आ गये।
कुछ दिनों बाद ये
तुम्हें चवन्नी-अठन्नी में ले आयेंगे।
तुम कहाँ थे कहाँ आ गये
लोग देखते रह जायेंगे।

लील गया

सूदखोर की नजर
बच्चे की
गुल्लक पर गई
बच्चे के सुनहरे सपनों को
ले गई।

- राजेन्द्र पटेरिया, नागपुर

Jain Sadhu

Jainism is not only religion
It portrays wide vision.
Its an ocean of purity,
With evidences showing reality.
Its a passage
to deliver message,
NON-VIOLENCE AND TRUTH.

Jain guru is like a tree
With picture of god for free.
have deep roots of strength,
branches of purity,
lives in conditions which are beyond imagination.

A ray of light
focussing on future which is bright.

Universal knowledge is their wealth
single meal keeps them in good health
picchi, kamandal are their jewels
and requirement is nothing else.

Spreading knowledge is the only mission,
and aim is making correct decisions.

People should follow their path
with determination and devotion by hearts.
to make golden goal-**MOKSHA.**

- Tushar Jain, Meerut

कोशिश करने वालों की

कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर सौ-सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो
क्या कमी रह गई है देखो और सुधार करो
जब तक सफल न हो नींद चैन का त्याग करो
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

- सोम्या जैन, भोपाल

If you want to learn,
Learn manners.

If you want to talk,
Talk gently.

If you want to see,
See yourself.

If you want to avoid,
Avoid violence.

If you want to bow,
Bow to the almighty.

If you want to cultivate,
Cultivate culture.

If you want to kill,
Kill anger.

If you want to fight,
Fight for peace.

- Priyanka Kumari, Kasli, Sikar

सिर्फ जिन्दगी न गुजारो - जीओ।

सिर्फ ह्रुओ नहीं - महसूस करो।

सिर्फ देखो नहीं - गौर करो।

सिर्फ पढ़ो नहीं - जीवन में उतारो।

सिर्फ सुनो नहीं - ध्यान से सुनो।

सिर्फ ध्यान से ही न सुनो - समझो।

सदा मुस्कराना और सबको प्यार करना

गुणीजनों का सम्मान पाना

बच्चों के दिल में रहना

सच्चे आलोचकों से स्वीकृति पाना

झूठे दोस्तों की दगाबाजी सहना

खूबसूरती को सराहना

दूसरों में खूबियाँ तलाशना

किसी उम्मीद के बिना

दूसरों के लिए खुद को अर्पित करना

उत्साह के साथ हँसना और खेलना

और मस्ती भरे तराने गाना

इस बात का एहसास कि

आपकी जिन्दगी ने किसी एक व्यक्ति का

जीवन आसान बनाया

यही सच्ची सफलता है।

- अक्षय जैन, बबीना

ईमानदारी

महत्त्वपूर्ण चिट्ठी

एक बार एक कम्पनी के लेखा विभाग में रिक्त पद के लिए साक्षात्कार हुआ। सैकड़ों आवेदकों ने इसमें भाग लिया। इस साक्षात्कार के पश्चात् दो उम्मीदवार सभी मानदण्डों पर खरे उतरे। इससे लेखा प्रबन्धक के सामने समस्या खड़ी हो गई। पद एक था और उम्मीदवार दो। किसी एक का चयन कर दूसरे के साथ अन्याय भी नहीं किया जा सकता था। क्या किया जाए? प्रबन्धक ने फैसला किया कि दोनों की पुनः परीक्षा ली जाए। दोनों उम्मीदवारों को इस हेतु बुलवाया गया। उनके रहने-ठहरने की उत्तम व्यवस्था शहर के एक अच्छे होटल में की गई। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार उनकी लिखित परीक्षा ली गई और पुनः साक्षात्कार भी हुआ।

इस प्रकार कई तरह से उनकी योग्यताओं को कसौटी पर कसा गया, लेकिन अन्तिम परिणाम वही। दोनों बराबरी पर आए। समस्या और बढ़ गई। अपनी समस्या को लेकर वह प्रबन्धक, मुख्य प्रबन्धक के पास गया और उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया। मुख्य प्रबन्धक ने उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुना और समस्या के हल का उपाय सुझाया। प्रबन्धक को वह उपाय बहुत पसंद आया और उसने उस पर अमल भी किया।

अगले दिन वह दोनों उम्मीदवारों को स्टेशन छोड़ने के लिए होटल लेने पहुँचा। पहले उम्मीदवार ने मिलते ही प्रबन्धक के हाथों में एक पैकेट दिया और कहा कि सर कल शाम को जब आप आए थे तो लौटते समय शायद भूलवश यह पैकेट मेरे कमरे में ही छोड़ गए थे। इस पर प्रबन्धक आश्चर्य से बोला - अच्छा! यह पैकेट मेरा है। क्या है इसमें? प्रश्न को सुनकर उम्मीदवार को बहुत आश्चर्य हुआ, बड़ी ही विनम्रता से उसने जवाब दिया - क्षमा चाहूँगा सर! जब यह पैकेट मेरा है ही नहीं तो मैं कैसे बता सकता हूँ कि इसमें क्या है। यह अगर आपका भी नहीं है तो निश्चित ही होटल वाले का होगा। कृपया आप उन्हें इसे दे दीजिएगा। प्रबन्धक ने उसकी बात पर मूक सहमति में सिर हिला दिया।

कुछ समय बाद दूसरा उम्मीदवार भी वहाँ आ गया और प्रबन्धक से हाथ मिलाते हुए बोला कि आपकी कम्पनी बहुत ही अच्छी है। प्रवेश पाने वाले उम्मीदवारों का इतना ख्याल तो कोई भी कम्पनी नहीं रखती होगी, इसका सबसे अच्छा उदाहरण है कि आपके जितना बड़ा ऑफिसर स्वयं हमें छोड़ने के लिए आया है। ऐसी कम्पनी में काम करने का मौका यदि मुझे मिलता है तो मैं स्वयं को धन्य समझूँगा।

प्रबन्धक ने बड़ी ही सजगता से उसकी बात सुनी और धीरे से मुस्करा दिए। तत्पश्चात् तीनों कार से स्टेशन की ओर चल दिए। स्टेशन पहुँचकर जब दोनों उम्मीदवार प्रबन्धक का अभिवादन कर जाने लगे तो उसने पीछे से दूसरे नम्बर के उम्मीदवार से पूछा कि मैं कल आपके कमरे में एक पैकेट भूल आया था। उसमें पचास हजार रुपये रखे थे। क्या वह पैकेट आप मुझे लौटाएँगे?

प्रबन्धक की बात सुनकर वह चौंका और उसने पलटकर देखा। उसका चेहरा पीला पड़ चुका था। काँपते हाथों से उसने बैग से पैकेट निकालकर प्रबन्धक के हाथों में रख दिया। पैकेट खुला हुआ था। फिर क्या था, फैसला हो चुका था। प्रबन्धक ने आगे बढ़कर पहले उम्मीदवार से हाथ मिलाया और कहा कि आपको वापस जाने की आवश्यकता नहीं है। आपको चुन लिया गया है। आप मेरे साथ कार्यालय में चलकर अपना नियुक्ति पत्र ले लीजिए।

- मनीष शर्मा